पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी ने अपने संकल्प पूर्ण किए

पदम् श्री डॉ. पूनम सूरी जी का यज्ञवेदी पर उपस्थित होते स्वागत करते डी.ए.वी. के वरिष्ठ वयोवृद्ध उपप्रधान श्री रामनाथ जी सहगल

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी ने प्रथम बार प्रधान निर्वाचित होने पर एक संकल्प आर्य जनता के सम्मुख लिया था कि आर्य समाज हमारी माँ है और डी.ए.वी. के प्राण में भी आर्य समाज ही प्रमुख है। इस कारण डी.ए.वी. के प्रत्येक छोटे-बड़े कार्यक्रमों का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से ही होगा। और उन्होंने स्पष्ट ऐलान किया था की डी.ए.वी. के सभी विद्यालय एवम् महाविद्यालय एवम् अन्य सम्बन्धित संस्थाएं इसको आज से एक अनिवार्य निर्देश समझे। प्रत्येक संस्था को अपने कार्यक्रमों से पूर्व वैदिक यज्ञ करना अनिवार्य होगा।

इसी संदर्भ में सभी सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं को निर्देश दिए कि आर्य समाज के सभी उत्सव वर्षभर (उदारणार्थ आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, ऋषि निर्वाण उत्सव, ऋषि जन्मोत्सव, ऋषि बोधोत्सव, महात्मा हंसराज दिवस आदि) अपनी शिक्षण संस्थाओं में विधिवत् रूप से आयोजित करेंगे। इससे डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों पर एक सकारात्मक संस्कारों का निर्माण होगा।

आपने यह भी निर्णय लिया था कि डी.ए.वी. मुख्यालय में प्रतिमास पहले कार्यकाल के दिन यज्ञ का आयोजन होगा और उस माह में आने वाले कर्मचारियों एवम् अधिकारियों के जन्मोत्सव पर विशेष आहूतियां देकर उन सभी को आशीर्वाद एवम् शुभकामनाएं दी जाएगी। डी.ए.वी. मुख्यालय में होने वाली सभी महत्वपूर्ण बैठकों से पूर्व यज्ञ का आयोजन होना भी आवश्यक होगा, ऐसे निर्देश दिए।

हमें गर्व है पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी पर कि उन्होंने अपने संकल्पों को पूर्ण एवम् कार्यान्वित भी करवाया। आज सम्पूर्ण भारत की डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं ने प्रधान जी द्वारा दिए गए उपरोक्त निर्देशों को पूर्ण रूप से श्रद्धापूर्वक अपनाया है।

इस प्रेरणा से सकारात्मक प्रमाण भी प्राप्त हो रहे हैं। डी.ए.वी. मुख्यालय के जो कर्मचारी आर्य समाज की विचारधारा से जुड़े हुए नहीं थे उन्होंने भी यज्ञ की परमपरा को अपने घरों तक पहुंचाया है और कई कर्मचारी अपने घर की निकटतम आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग सपत्नीक उपस्थित होने लगें हैं और ऐसे प्रेरणादायक समाचार सम्पूर्ण डी.ए.वी. परिवार से प्राप्त होते रहते हैं।

प्रधान श्री पूनम सूरी जी की इस प्रेरणा के जो सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं उसके लिए समस्त टंकारा परिवार एवम् टंकारा सम्पादकीय मंडल की ओर से साधुवाद एवम् परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की ऐसे आर्यपुत्र की दीर्घ आयु हो और स्वस्थ रहते हुए इसी प्रकार से आर्यसमाज और उस देवदयानन्द के मन्तत्वों के प्रचार प्रसार में निरन्तर अग्रसर होते रहे। (पदम् श्री डॉ. पूनम सूरी जी टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी भी हैं।)

(विशेष संवाददाता द्वारा प्रेषित)

पदम् श्री डॉ. पूनम सूरी जी के संकल्प अनुसार डी.ए.वी. मुख्यालय पर मासिक यज्ञ पर डी.ए.वी. के वरिष्ठ वयोवृद्ध उपप्रधान श्री रामनाथ जी सहगल के जन्मोत्सव पर शुभकामनाएं देते डॉ. पूनम सूरी एवम् श्री एस.के. शर्मा, महामन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा (यह चित्र कुछ माह पूर्व के है)

ऋषियों का संदेश

- विषयों को भोगकर, इन्द्रियों की तृष्णा को समाप्त करनेवाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है, जैसा कि आग को बुझाने के लिए उसमें घी डालना।
- यह मानना तुम्हारा सबसे बड़ा अज्ञान है कि "मैं कभी मरूँगा नहीं, "यह शरीर बहुत पवित्र है", "विषय भोगों में पूर्ण और स्थायी सुख है", तथा "यह देह ही आत्मा है।"।
- तुम्हारे मन में अच्छे या बुरे विचार अपने आप नहीं आते। इन विचारों को तुम अपनी इच्छा से ही उत्पन्न करते हो, क्योंकि मन तो यन्त्र के समान जड़ वस्तु है, उसका चालक आत्मा है।
- किसी के अच्छे या बुरे कर्म का फल तत्काल प्राप्त होता न देखकर तुम यह विचारों कि इन कर्मों का फल आगे नहीं मिलेगा। कर्म-फल से कोई भी बच नहीं सकता, क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।
- संसार (=प्रकृति), संसार को भोगनेवाला (=जीव) तथा संसार को बनाने वाले (=ईश्वर) के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही तुम्हारे समस्त दु:ख, भय, चिन्ताएँ समाप्त हो सकती है और कोई उपाय नहीं है।
- "मनुष्य जीवन ईश्वर प्राप्ति के लिए मिला है" इस मुख्य लक्ष्य को छोड़कर अन्य किसी भी कार्य को प्राथमिकता मत दो, नहीं तो तुम्हारा जीवन चन्दन के वन को कोयला बनाकर नष्ट करने के समान ही है।
- तुम्हारे जीवन की सफलता तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि अविद्या के कुसंस्कारों को नष्ट करने में ही है। यही समस्त दु:खों से छूटने का श्रेष्ठ उपाय है।
- जब तक तुम संसार के सुखों के पीछे छिपे हुए दु:खो को समझ नहीं लोगे, तब तक वैराग्य उत्पन्न नहीं होगा। बिना वैराग्य के चंचल मन एकाग्र नहीं होगा, एकाग्रता के बिना समाधि नहीं लगेगी, समाधि के बिना ईश्वर का दर्शन नहीं होगा, बिना ईश्वर-दर्शन के अज्ञान का नाश नहीं होगा और अज्ञान का नाश हुए बिना दु:खों की समाप्ति और पूर्ण तथा स्थायी सुख (=मुक्ति) की प्राप्ति नहीं होगी।
- तुम इस सत्य को समझ लो कि 'अज्ञानी मनुष्य ही जड़ वस्तुओं (=भूमि, भवन, सोना चाँदी) तथा चेतन वस्तुओं (=पति, पत्नी, पुत्र, मित्र आदि) को अपनी आत्मा का एक भाग मानकर, इनकी वृद्धि होने पर प्रसन्न तथा हानि होने पर दु:खी होता है।'
- तुम्हारे लोहे रूपी मन को, विषययोग रूपी चुम्बक सदा अपनी और खींचते रहते हैं। ज्ञानी मनुष्य विषय भोगों से होने वाली हानियों का अनुमान लगाकर इनमें आसक्त नहीं होते, किन्तु अज्ञानी मनुष्य इनमें फंसकर नष्ट हो जाते है।
- महान् ज्ञान, बल, आनन्द आदि गुणों का भण्डार, ईश्वर एक चेतन वस्तु है, तो अनादिकाल से तुम्हारे साथ है, न कभी वह अलग हुआ, न कभी होगा। उसी संसार के बनानेवाले, पालन करने, सबके रक्षक, निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना तुम सब मनुष्यों को सदा करनी चाहिए।

सब व्यवहार करने वालों को चाहिए कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसकी उसी काम में प्रवृत्त करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ 8.20

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

शुभगुण सब मतों में अच्छे हैं, बाकी वाद-विवाद, ईर्ष्या-द्वेष, मिथ्यायाषणादि कर्म सब मतों में बुरे है। यदि तुम को सत्य मत ग्रहण की इच्छा होतो वैदिकमत को ग्रहण करें।

23.ओ३म् उसका नाम है, जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है। अन्य की नहीं। सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान व निज नाम ''ओ३म्'' को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम है। सब वेद सब धर्म अनुष्ठान रूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य आश्रम करते हैं, उसका नाम ''ओ३म'' है।

यह लेख भी मैंने आते उपयोगी व उत्तम समझकर श्री अत्तरसिंह जी आर्य ''क्रान्तिकारी'' (प्रधान हरियाणा आर्य युवक परिषद्) द्वारा लिखित ''महापुरुषों की दृष्टि में दयानन्द व महर्षि के सत्यउपदेश ''नामक पुस्तक से उद्धृत किया है। इस पुस्तक में लेखक ने सत्यार्थप्रकाश के आधार पर महर्षि के समस्त विचारों को प्रकट किया है। इतनी उपयोगी पुस्तक को लिखने के लिए मैं ''क्रान्तिकारी'' जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। साथ ही सुधि पाठकों से भी विनम्र निवेदन करता हूं कि वे इस लेख को खूद मन लगाकर पढ़े ताकि मेरा तथा ''क्रान्तिकारी'' जी का परिश्रम सफल हो सके।

C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजिल, कोलकत्ता-700007, मो. 8232025590

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के बिना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ 8.41

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते इससे मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। - महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ 5.40

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

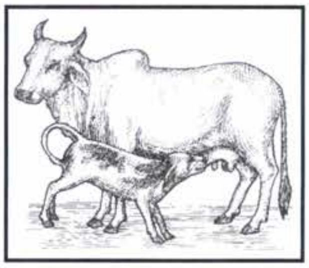

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

- सकाम शुभ कर्मो को करने वाला भी बुरे कर्मों स पूर्णतया बचने का उपाय मात्र निष्कामता है।
- व्यक्ति स्वयं ही अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न कर लेता है व उनमें फंसा रहता है।
- राग-द्वेष की स्थिति में बुद्धि गहराई को नहीं छू सकती।
- सिद्धान्त रूप में लिखी हुई बातों का जो व्यक्ति प्रयोग करता जायेगा उसे ही ऋषियों और वेदों की बातें समझ में आयेंगी।
- संसार का सबसे बड़ा यह है कि समाज को दिखायें कि वेदों में बताये गये आदर्श, जीवन में उतारे जा सकते है। बिना इसके समाज का पतन रूक नहीं सकता।
- भोग को मुख्य मानने से व्यक्ति पाप-पुण्य की परिभाषायें तोड़ देता है अथवा उनको अपनी इच्छानुसार बदल देता है।
- दयानन्द, नचिकेता आदि आदर्शो से कभी नहीं डिगे, डिगते नहीं दीखते। जिसके मन में तड़प हो, मृत्यु को भी तुलना में छोटा मानता हो, वही ऐसा बन सकता है।
- दूसरा व्यक्ति हमें हमारे दोष तब बतायेगा, जब वह हमसे निर्भय हो। यदि उसे पता है कि दोष बताने पर यह स्वीकारेगा नहीं, क्रोधित होगा, द्वेष कर लेगा वा उल्टे दो-चार दोष उसको ही बता देगा, तो वह हमें हमारे दोष क्यों बतायेगा?
- ईश्वर प्राप्ति में लगा साधक ईश्वर प्राप्ति के लिए, ईश्वर प्राप्ति में बाधक वस्तु या व्यक्ति से द्वेष कर बैठे तो उसकी ईश्वर से दूरी बढ़ जायेगी। जिस ईश्वर की प्राप्ति के लिए बाधक वस्तु से द्वेष किया था, वह ईश्वर बाधक वस्तु या व्यक्ति से द्वेष करने के कारण प्राप्त न हो सकेगा।
- अपने ईश्वर को श्रेष्ठ मानकर अन्य मत वालों से द्वेष करना, घृणा करना, उन्हें मारना, उनकी हानि करना अनुचित है। लोग इसे ईश्वर के प्रति भक्ति मानते हैं। पर ऐसा करने से तो ईश्वर उनसे दूर हो जाता है।
- ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि है। अनादि इसलिए है क्योंकि इनके तीन उत्पादक कारण (निमित्त, उपादान और साधारण) नहीं है।

आत्म निरीक्षण-अतिमन्द बुद्धि वालों को छोड़कर शेष सभी व्यक्ति जो ऋषिकृत ग्रंथो का स्वाध्याय करते हैं, आत्मनिरीक्षण से पता लगा सकते है कि वे पूर्ण सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकारी हैं या नहीं।

- आत्मनिरीक्षण यह बता देता है कि जिन सांसारिक विषयों को हम दु:ख रूप पढ़ते, सुनते, समझते हैं, उन्हीं की प्राप्ति की इच्छा अभी हमारे मन में है व उसके लिए प्रयास भी करते रहते हैं।
- आर्ष ग्रंथ जिस प्रयोजन के लिए लिखे गये हैं, उन्हें पढ़कर हम उस प्रयोजन को कितना पूरा कर पा रहे हैं? उसके लिए कितना प्रयास कर रहें हैं? यह विचारना चाहिए।
- विफलता, क्लेश, पतन जितना होता है, उसके मूल में उतनी ही मात्रा में अविद्या होती है और जितनी सफलता, सुख उन्नति होती है उसके मूल में उतनी ही विद्या होती है। अपना परीक्षण करें कि 'मैं कहां खड़ा हूँ'। सत्यग्राही व्यक्ति अपने में अविद्या को सहन नहीं करेगा।
- आत्मनिरीक्षण करें कि ''क्या मैं अपने दोषों से संधि-समझौता तो नहीं करता हूँ''?
- योगाभ्यासी आत्मनिरीक्षण करता रहे कि मेरे जीवन में कोई आडम्बर तो नहीं है? मैं केवल दिखावे के लिए तो कोई कार्य नहीं कर रहा हूँ?
- आध्यात्मिक प्रगति की अनुभूति होने पर भी साधक को यह सोचते/परीक्षण करते रहना चाहिए कि ''मैं कहीं गलत तो नहीं मान बैठा हूँ, बिना प्रगति के प्रगति की अनुभूति तो नहीं कर रहा हूँ।?

कुसंस्कार-संस्कारवशात्, विवशता से त्रुटि हो जाने पर जो कुसंस्कार बनते हैं वे बहुत हल्के होते हैं, पर जानबूझकर, सुख ले लेकर जो त्रुटि की जाती है/भोगा जाता है उसके कुसंस्कार बहुत दृढ़ बनते हैं। इन्हें हटाने में भी बहुत परिश्रम व काल लगता है।

- उत्पन्न होने वाली चीज नष्ट होती है। जो बनाई जा सकती है, वह नष्ट भी की जा सकती है। इसी सिद्धान्त के अनुसार कुसंस्कारों को भी रोका जा सकता है, दुर्बल किया जा सकता है और उन्हें नष्ट भी किया जा सकता है।
- जैसे हम अपने दु:ख का हर प्रकार से विरोध करते हैं, उसे हटाने के लिए पूरा प्रयत्न करते हैं, स्वयं कष्ट उठाकर भी उसका नाश करते हैं, वैसे ही योगाभ्यासी को कुसंस्कारों से लड़ना पड़ता है।
- आंतरिक दोषों की मात्रा बाहरी दोषों से बहुत अधिक होती है। बिना समाधि के, जन्म-जन्मान्तर के सूक्ष्म कुसंस्कारों को तो व्यक्ति देख भी नहीं पाता है, उन्हें हटाने की बात तो दूर रही।
- तप रहित व्यक्ति कुसंस्कारों के उभरने पर भोग की ओर झुक जाता है। तपस्वी व्यक्ति कुसंस्कारों के उभरने पर उनसे लड़ता है और उन्हें जीत लेता है।
- सतत ईश्वर-प्राणिधान बनाये रखने से जन्म-जन्मान्तर के कुसंस्कार क्षीणता को प्राप्त होते रहते हैं, उन पर चोट पहुँचती रहती है, फलत: वे धीरे-धीरे नष्ट होते जाते हैं।
- ज्ञान का प्रयास पूर्वक पकड़ कर रखे बिना, उसे शोधे बिना तथा अज्ञान को हटाये बिना कुसंस्कारों को मार नहीं सकते, पाप से बच नहीं सकते।
- जो व्यक्ति यह सोचकर चलता है कि जन्म-जन्मान्तर के कुसंस्कार है जाते जाते जायेंगे, वह टालमटोल तथा परिश्रम से बचने की बात है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति उन कुसंस्कारों को दूर करने का प्रयत्न भी छोड़ देता है।

- दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, सागरपुर, जिला-साबरकांठा गुजरात-383307

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2017 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

'यस्मादेते मुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यसृज्यन्त।' -इत्यादि।

यह यजुर्वेद के 31वें अध्याय का 11वां मन्त्र है।

इसका यह अर्थ है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख, क्षत्रिय बाहू, वैश्य ऊ3 ओरशूद्र पगों से उत्पन्न हुआ है। इसलिए जैसे मुख न बाहू आदि और बाहू आदि न मुख होते हैं, इसीप्रकार ब्राह्मण न क्षत्रियादि और क्षत्रियादि न ब्राह्मण हो सकते।

उत्तर: इस मन्त्र का अर्थ जो तुमने किया, वह ठीक नहीं। क्योंकि यहाँ पुरुष अर्थात् निराकार, व्यापक परमात्मा की अनुवृत्ति आती है। जब वह निराकार है तो उसके मुखादि अंग नहीं हो सकते, जो मुखादि अंगवाला हो, वह पुरुष अर्थात् व्यापक नहीं और जो व्यापक नहीं वह सर्वशक्तिमान, जगत् का सृष्टा, धर्त्ता, प्रलयकर्त्ता, जीवों के पुण्य-पापों को जान के व्यवस्था करने हारा, सर्वज्ञ, अजन्मा, मृत्युरहित आदि विशेषणवाला नहीं हो सकता। इसलिए इसका यह अर्थ है कि जो (अस्य) पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सबमें मुख्य उत्तम हो, वह (ब्राह्मण) ब्राह्मण (बाहू)-**'बाहुर्वै बलं बाहुर्वै वीर्यम्''** शतपथब्राह्मण।।

बल वीर्य का नाम बाहु है, वह जिसमें अधिक हो सो (राजन्य:) क्षत्रिय (उरु) कटि के अधोभाग और जानु के उपस्थित भाग का नाम है। जो सब पदार्थो, सब देशों में ऊरु के बल से जावे-आवे, प्रवेश करे, वह (वैश्य:) वैश्य और (पद्भ्याम्) जो पग के नीचे, अंग के सदृश, मूर्खतादि गुणवाला हो, वह शूद्र है। अन्यत्र शतपथ ब्राह्मणादि में भी इस मन्त्र का ऐसा ही अर्थ किया है। जैसे-

'यस्मादेते मुख्यास्तस्मान्मुखतो ह्यसृज्यन्त।' -इत्यादि।

जिससे ये मुख हैं, इससे मुख से उत्पन्न हुए, ऐसा कथन संगत होता है। अर्थात् जैसा मुख सब अंगों में श्रेष्ठ है, वैसे पूर्ण विद्या और उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव से युक्त होने से मनुष्य जाति में उत्तम ब्राह्मण कहातें हैं। जब परमेश्वर के निराकार होने से मुखादि अंग ही नहीं हैं, तो मुख आदि से उत्पन्न होना असम्भव है। जैसा कि बन्ध्या स्त्री के पुत्र का विवाह होना। और जो मुखादि अंगों से ब्राह्मणादि उत्पन्न होते तो उपादान कारण के सदृश्य ब्राह्मणादि की आकृति अवश्य होती। जैसे मुख का आकार गोलमाल है, वैसे ही उनके शरीर भी गोलमाल होने चाहिए। क्षत्रियों के शरीर भुजा के सदृश्य, वैश्यों के ऊरु के तुल्य और शूद्रों के शरीर पग के समान आकारवाले होते। ऐसे नहीं है। और जो कोई तुमसे प्रश्न करेगा कि जो-जो मुखादि से उत्पन्न हुए थे, उनकी ब्राह्मणादि संज्ञा हो, परन्तु तुम्हारी नहीं, क्योंकि जैसे सब लोग गर्भाशय से उत्पन्न होते हैं, वैसे तुम भी होते हो। तुम मुखादि से उत्पन्न न होकर ब्राह्मणादि अभिमान करते हो, इसलिए तुम्हारा कहा अर्थ व्यर्थ और जो हमने अर्थ किया है, वह सच्चा है। ऐसा ही अन्यत्र भी कहा है जैसा-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। - मनु.।।

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश गुण वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाये। वैसे ब्राह्मण, वैस ही क्षत्रिय और वैश्य के कुल में उत्पन्न हुये शूद्र के सदृश्य हों, तो शूद्र हो जायें। वैसे ही क्षत्रिय, वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण वा शूद्र के समान होने से, ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाते हैं। अर्थात् चारों वर्णो में जिस-जिस वर्ण के सदृश्य जो-जो पुरुष वा स्त्री हो, वह-वह उसी वर्ण में गिनी जावे।

धर्मचर्य्यया जघन्यो वर्ण:।
पूर्व पूर्व वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।1।।
अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।2।।- यह आपस्तम्ब का सूत्र है।

धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम-उत्तम वर्ण को प्राप्त होता है और वह उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस-जिस के योग्य होवे।।1।।

वैसे अधर्माचरण से पूर्व-पूर्व अर्थात् उत्तम-उत्तम वर्णवाला मनुष्य अपने से नीचे वर्णो को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे।।2।।

जैसे पुरुष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है, वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिए। इससे क्या सिद्ध हुआ कि इस प्रकार होने से सब वर्ण अपने-अपने कर्म, गुण, स्वभावयुक्त होकर शुद्धता के साथ रहते हैं, अर्थात् ब्राह्मणकुल में कोई क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के सदृश न रहे और क्षत्रिय, वैश्य तथाशूद्र वर्ण भी शुद्ध रहते हैं। वर्णसंकरता प्राप्त न होगी। इससे किसी वर्ण की निन्दा वा अयोग्यता भी न होगी।

प्रश्न: जो किसी के एक ही पुत्र वा पुत्री हो, वह दूसरे वर्ण में प्रविष्ट हो जाए तो उसके मां-बाप की सेवा कौन करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायेगा, इसकी क्या व्यवस्था होनी चाहिए?

उत्तर- न किसी की सेवा का भंग और न वंशच्छेदन होगा, क्योंकि उनको अपने लड़के-लड़कियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान, विद्यासभा और राजसभा की व्यवस्था से मिलेंगे, इसलिए कुछ भी अव्यवस्था न होगी। यह गुण कर्मो से वर्णो की व्यवस्था कन्याओं की सोलहवें वर्ष और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष की परीक्षा में नियत करनी चाहिए और इसी क्रम से अर्थात् ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्र का शूद्रा के साथ विवाह होना चाहिए, तभी अपने-अपने वर्णो के कर्म और परस्पर प्रीति भी यथायोग्य रहेगी। (सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास)

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

सोने से पूर्व आप क्या करें?

❒ आयुर्वेद शिरोमणि डॉ. मनोहरदास अग्रावत

जहां तक हो सके प्राकृतिक नियमों से ही नींद लें तभी स्वास्थ्य स्थिर रह सकेगा। यदि नींद लाने की नितान्त आवश्यकता हो तो निम्नलिखित घरेलू सरल सात्विक दवा उपयोग में लाएँ। निद्रा की आवश्यकता के सम्बन्ध में आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत में कहा है-

'तुष्टि वर्ण बलोत्साहमग्निदीप्तिमतन्द्रिताम्।
करोति धातु साम्यं च निद्राकाले निषेविता॥'

अर्थात्-समय पर (यानी पूरे समय तक) सोना पुष्टि देता है, रूप को सुन्दर करता है, बल बढ़ता है, जठराग्नि को तेज करता है, आलस्य दूर करता है और धातुओं को सम करता है। यदि आप सुख की नींद सोना चाहते हैं, तो नियमित समय पर सोने की आदत डालें। कई लोग जब तक थककर चूर न हो जायें तब तक पढ़ते-लिखते या काम करते रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि दिमाग किसी गुत्थी को सुलझाने के चक्कर में पड़ जाता है और फिर मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और उसकी नींद उड़ जाती है। नींद लाने के लिए आप निम्नलिखित उपाय करें:-

(1) सोने से पहले घर की कुंडी-सांकल या चाबी सब देख लें कि लगा दी है या नहीं। पानी के नल और बाहर की बिजली या बत्ती बंद कर दें ताकि आपको दुविधा और खटका न बना रहे। खाने-पीने की चीज, अपना बटुआ, फाईल या अन्य कोई वस्तु सुरक्षित स्थान पर रख दें। मेज पर सिरहाने पानी का जग या लोटा भरकर ढक दें, घर में यदि कोई बच्चा-बीमार या बूढ़ा है तो उसकी जरूरत को पहले निपटा दें।

(2)दिन के समय अधिकांश काम खत्म कर लेना चाहिए। जो काम जरूरी हो उसे दस बजे से पहले खत्म कर दें ताकि आप बेफिक्र होकर सो सकें।

(3) रात का भोजन सोने से कम से कम एक घंटा पहले कर लें। सोने से आधा घंटा पूर्व एक प्याला गर्म दूध अथवा गर्म पानी पीने से नींद आने में सुविधा होती है।

(4) यदि आप बहुत थके हुए हैं तो सोने से पूर्व आधी बाल्टी गर्म पानी में पांव डालकर उन्हें धीरे-धीरे मलें, इससे थकान दूर होगी और यदि परिचालन-पांवों की तरफ होने से सिर हल्का हो जायेगा और नींद आने लगेगी।

(5) सोने से पूर्व उत्तेजनाप्रद कोई पुस्तक न पढ़े और क्रोध या झुंझलाहट दिलाने वाली बहस में भी शामिल न हों। सोने से पूर्व कहानी या संगीत सुनना भी लाभदायक है। इससे शिराओं का तनाव कम होता है।

(6) पलंग झाड़कर बिछायें, बिस्तरा आरामदायक हो। शैया सुखदायक होनी चाहिए। मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का कष्ट न हो। ऐसे स्थान पर सोयें, जहां प्रकाश धीमा हो, शोरगुल न हो और कुछ एकान्त हो।

(7) सोने से पूर्व दाँतों का मंजन करके, मुंह धोकर ढीले कपड़े पहन लें। तंग कपड़ों में शरीर भारहीन नहीं हो पाता। पलंग पर लेटकर अंगो को ढीला डाल दें। भगवान से प्रार्थना करें, मन में सात्विक विचार लायें और सुखदायक करवट लेकर भगवान का स्मरण करते हुए या कोई प्रिय स्मृति मस्तिष्क में संजोकर आँख मूंदकर आराम से सो जायें।

(8) कई लोगों की आदत होती है कि सोने से पहले कुछ देर पढ़ते हैं। इस समय कोई डरावनी या मस्तिष्क को उत्तेजित करने वाली पुस्तक नहीं पढ़नी चाहिए। कोई धार्मिक पुस्तक, अखबार या हल्का फुल्का साहित्य पढ़ना ही उचित होगा। जब पलकें भारी होने लगें तो पुस्तक पास की टेबल पर रखकर और बत्ती बुझाकर सुख से सोयें। पढ़ते समय बत्ती ऐसे स्थान पर रखें कि प्रकाश आपकी आँखों पर न पड़कर पीछे से पुस्तक पर पड़े।

(9) कभी-कभी कब्ज होने, मलमूत्र का वेग रोकने से भी नींद ठीक नहीं आती। खांसी या जुकाम से भी स्वाभाविक श्वास क्रिया में बाधा उत्पन्न होती है, ऐसे में गारगल करके नाक में कुछ बूंदे तेल डालकर या विक्स लगाकर सोयें। मुंह में एक लोंग दबा लें ताकि गले में खराश पैदा न हो।

(10) नींद न आने के कारण या तो शारीरिक कष्ट होता है या मनोवैज्ञानिक गतिविधि। शारीरिक कष्ट को तो आप उपचार से ठीक करें और मनोवैज्ञानिक कारण को समझदारी और आस्था से। पलंग पर यह विश्वास करके जायें कि नींद जरूर आयेगी। शांत विश्राम करना शरीर की स्वाभाविक मांग है। यदि एक दिन नींद नहीं आई है तो दूसरे दिन अवश्य आयेगी। नींद नहीं आयेगी इसी चिंता में आप यदि परेशान रहेंगे तो नींद आपसे कोसों दूर भागेगी।

(11) जिन्हें नींद कम आती है, उन्हें दिन में नहीं सोना चाहिए। यदि वे अपनी दिनचर्या नियमित और खान-पान संतुलित रखें तथा नियम से सुबह-शाम वायु सेवन के लिए जाएं, मित्रों और बच्चों की संगति में कुछ समय मनोविनोद में बितायें तो उनके अंग व स्नायु स्वस्थ हो सकेंगे। जिन्हें अनिद्रा की शिकायत है उन्हें चाय, काफी, कोको, कहवा या नशे और व्यसन से दूर रहना चाहिए। स्वास्थ्य और नींद का आपस में बड़ा सम्बन्ध है। जिनका स्वास्थ्य अच्छा होगा उन्हें भूख भी अच्छी लगेगी, परिश्रम करने को जी करेगा और वे सुख की नींद भी सो सकेंगे।

(12)अन्तरात्मा के विरूद्ध कर्म न करें। अपराधी, धोखेबाज, अन्यायी और अत्याचारी को सुख की नींद कभी नहीं आती। यदि दिन में आप सीना तानकर स्वच्छन्द घूमना चाहते हैं और रात को गहरी नींद सोना चाहते हैं तो निष्पाप रहें और कर्ज (ऋण, उधार) कभी भूलकर भी न लें।

(13) यदि किसी रात अचानक किसी शोरगुल या खटके से आपकी नींद उचट गई है तो आप शान्त मन से कुछ पद गुन गुनाते या सुखद-स्मृति पर विचार करते हुए आराम से पड़े रहें। प्रथम तो नींद अवश्य आ जायेगी यदि नहीं भी आई तब भी आप यदि हल्के भारहीन सुख से लेटे रहेंगे तो आपकी थकावट तो अवश्य ही दूर हो जायेगी।

(14) नशीली नींद की गोलियों का प्रयोग मनुष्य को भूलकर भी नहीं करना चाहिए। इस प्रकार की गोलियाँ जीवन नाशक होती हैं। समाचारपत्रों में कई बार पढ़ने को मिलता है कि नींद की गोलियों से मृत्यु हो गई। जहां तक हो सके प्राकृतिक नियमों से ही नींद लें तभी स्वास्थ्य स्थिर रह सकेगा। यदि नींद लाने की नितान्त आवश्यकता हो तो निम्नलिखित घरेलू सरल सात्विक दवा उपयोग में लाएँ।

नींद लाने की दवा (अनुभूत प्रयोग)

सामग्री-तिल का तेल 100 ग्राम और कपूर 7 ग्राम।

विधि-तेल को गरम करके उतार लीजिए और फिर उसमें कपूर मिलाकर ठंडा होने पर पैरों के तलुओं पर खूब मालिश कीजिए। परिणाम-खूब नींद आयेगी।

जायफल को घी में घिसकर पलकों पर लगाने से निद्रा शीघ्र आ जाती है।

-मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो. तारापुर-458330, जिला-नीमच (जावद-मध्य प्रदेश)

વરુણે પોતાના પુત્ર ભૃગુને ઉપદેશ આપ્યો હતો કે બ્રહ્મ કે આનન્દ, અન્ન, પ્રાણ, મન, વિજ્ઞાન (આત્મા)માં નથી, અપિતુ આનન્દ પરમાત્માનો પર્યાયવાચી શબ્દ છે. એટલે આનન્દ જ બ્રહ્મ છે.

૧૦ છાંદોગ્ય ઉપનિષદઃ- ઉદ્‌ગીથ ત્રણ અક્ષરના ઉત્ + ગી + થ માંથી બને છે. શરીરમાં પ્રાણ જ ઉત્ છે કારણ કે પ્રાણોના હોવાથી જ માનવ પ્રત્યેક પ્રકારની ઉન્નતિ કરી શકે છે. અન્ન ધર્મ છે, અન્નમાં જ બધું સમાયેલું છે. વસ્તુતઃ ઓ૩મ્ ની ઉચ્ચ સ્વરે ઉપાસના કરવાનું નામ જ ઉદ્‌ગીથ છે. ઉદ્‌ગીથ અને પ્રણવ એક જ છે. એ બંને પર્યાયવાચી શબ્દ છે.

- પાંચ ઈન્દ્રિઓ, વાણી, આંખ, કાન, મન અને પ્રાણમાં પ્રાણ સર્વશ્રેષ્ઠ છે, કારણ કે વાણી, આંખ, કાન, અને મન ન હોય તે માણસ જીવતો તો રહે છે. પરંતુ જો શરીરમાંથી પ્રાણ નિકળી જાય તો એ મરી જાય છે.
- યજ્ઞના પાંચ અંગ હોય છે –
  ૧. દીક્ષા- જે વ્યક્તિ ખાય પીવે છે પરંતુ એમાં ડૂબી નથી જતો, એ વ્યક્તિનું જીવન દીક્ષાનું જીવન છે.
  ૨. ઉપસદ – એનાથી વિરુદ્ધ જે ખાય-પીવે છે અને એમાં જ ડૂબેલો રહે છે એનું જીવન ઉપસદનું છે. સંસારના મોટા ભાગના લોકો આવું જ જીવન જીવે છે.
  ૩. દક્ષિણા – જે વ્યક્તિ દાન, તપ, અહિંસા અને સત્યનું જીવન જીવે છે, એનું જીવન દક્ષિણાનું જીવન છે.
  ૪. સ્તુત શાસ્ત્ર - જે વ્યક્તિ ખબ જ હસે, ખાય, પીવે, અને મૈથુન કરે છે એ સ્તુત શાસ્ત્રનું જીવન છે.
  ૫. અવભૃથ – જીવન રુપી યજ્ઞમાં વ્યકતનો મનુષ્ય રુપમાં પુનર્જન્મ જ સોષ્યતિ તેમજ અસીષ્ટ કહેવાય છે. સોષ્યતિનો અર્થ છે રસ કાઢવો અને અસીષ્ટનો અર્થ છે રસ કાઢ્યો. આને જ અવભૃથનું જીવન કહેવાય.
- તત્વમસિનો અર્થ છે તું એ છે. તારું આત્મતત્ત્વ જ સત્ છે ન કે તારું શરીર. આ ઉપદેશ અરુણે પોતાના પુત્ર શ્વેતકેતુને આપ્યો હતો.
  - અન્ન અને જળ ત્રણ પ્રકારના હોય છે. ખાધેલા અન્નનો સ્થૂળભાગ મળ બને છે, મધ્યભાગમાંથી માંસ બને છે અને સૂક્ષ્મભાગમાંથી મન બની જાય છે. એવી જ રીતે પિધેલા જળનો સ્થૂળ ભાગ મૂત્ર બની જાય છે, મધ્ય ભાગ રક્ત બને છે અને સૂક્ષ્મભાગમાંથી પ્રાણ બની જાય છે.

૧૧ બૃહદારણ્યકોપનિષદઃ- સત્ય જ ધર્મ છે, ત્યારે જ સત્ય બોલવાવાળા લોકો માટે કહેવામાં આવે છે કે આ ધર્મ કહેવાય છે અને ધર્મ બોલવા વાળાઓ માટે કહેવાય છે એ સત્ય કહેવાય છે. વસ્તુતઃ ધર્મ અને સત્ય બંને પર્યાયવાચી શબ્દ છે.

- યાજ્ઞવલ્કયે પોતાની પત્ની મૈત્રેયીને આત્મોપદેશ આપતા કહ્યું હતું કે પોતાના આત્માની કામના માટે જ ધન, પત્ની, પુત્ર, ભાઈ, બહેન આદિ પ્રિય હોય છે. એ આત્મા જ તો દ્દષ્ટવ્ય, શ્રોતવ્ય, મન્તવ્ય અને નિદિધ્યાસિતવ્ય છે. એને જ જો, સાંભળ, અને એને જ જાણ અને ધ્યાન કર. આમ કરવાથી જ બધી ગાંઠો ખૂલી જાય છે. એટલે જ આત્માને જાણો .... આત્માને જાણો.
- વસ્તુતઃ પ્રેમ ત્યાં સુધી જ રહે છે જ્યાં સુધી એકબીજાને પ્રેમ કરતા રહો. જો આજે આવું જ હોત તો આજ સુધી કકયારેય કોઈ પિતા પોતાના પુત્રને ઘરમાંથી બહાર કાઢીને પોતાની સમ્પત્તિ આદિમાંથી વંચિત ન કરત અથવા પુત્ર પોતાના પિતાને ઘરમાંથી કાઢી ન મૂકત. આવી જ રીતે કોઈ પણ પતિ-પત્નીમાં છુટાછેડા લઈને જુદા પડવાની ભાવના ન જાગત, એટલે આપણે કોઈને પણ ત્યાં સુધી જ પ્રેમ કરીએ છીએ જ્યાં સુધી એ આપણા આત્માને સંતોષે છે, જે કોઈપણ આપણા આત્માને દુઃખી કરે છે તો આપણે એનીથી છૂટકારો મેળવવા માટે તૈયાર થઈ જઈએ છીએ. વસ્તુતઃ જેયારે આપણે એકબીજાને પ્રેમ કરીએ છીએ ત્યારે આપણે આપણા આત્માને જ પ્રેમ કરી રહ્યા હોઈએ છીએ.
- યાજ્ઞવલ્કયે પોતાની પત્ની મૈત્રેયીને બ્રહ્મવિદ્યાના ઉપદેશમાં કહ્યું છે – કે પતિના પ્રયોજન માટે પતિ પ્રિય નથી હોતો પરન્તુ પોતાના આત્માના પ્રયોજન માટે જ એ પ્રિય હોય છે. સ્રીના પ્રયોજન માટે સ્રી પ્રિય નથી હોતી પરન્તુ પોતાના પ્રયોજન માટે જ સ્રી પ્રિય હોય છે. એટલે પ્રત્યેક વસ્તુ પોતાના પ્રયોજન માટે જ પ્રિય લાગે છે. એટલે સંસારનો કોઈપણ માણસ કોઈપણ વ્યક્તિ માટે કંઈ જ નથી કરતો, જ્યાં સુધી એને દિવ્યાનંદ કે બ્રહ્માનંદ પ્રાપ્ત ન થાય સંસારના બધાં જ લોકો પોતાનૌ સ્વાર્થ માટે જ કાર્ય કરે છે. પરન્તુ પરમાત્મા અને મહાપુરુષ બીજાના કલ્યાણ માટે જ કાર્ય કરે છે. કારણ કે પરમાત્મા જ આનંદ છે અને મહાપુરુષને આનંદાનુભૂતિ થઈ ચુકી હોય છે.

समाचार दर्पण

आर्यन अभिनन्दन समारोह

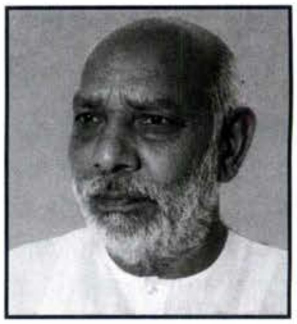

प्रत्येक वर्ष की भांति इस बार भी 17 सितम्बर 2017 को दिल्ली में आर्यो का अभिनन्दन किया जाएगा।

1. जो आर्यो व्यक्तिगत रूप से प्रकाशन चला रहे है, पत्रिका निकाल रहे हैं, पुस्तक विक्रेता हैं।
2. आर्य समाज के प्रचार में एक ही परिवार से पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भाई आदि वेद प्रचार में लगे हैं।
3. जो पुरोहित एक ही आर्य समाज में 25 वर्ष या उससे ज्यादा समय से बैठकर सेवा कर रहे हैं।

हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण लिखकर भेजने की कृपा करें।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए-41, लाजपत नगर, द्वितीय, (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-110024
फोन-011-45791152, 29842527, 9599107207

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन भेजने का कष्ट करें। (पहले आए पहले पाए) गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।)

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की क्षमता रखता हो ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य, शास्त्री आदि की डिग्री हो या न हो तो भी आवेदन कर सकते हैं। वेतनमान योग्यतानुसार। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण समेत आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,
डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :
आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,
फोन: 01495-270503, मो. 09416747308

Commandments for the Over 50s

Act and behave your age: Face and accept the reality of getting old, its consequences and the limitations which growing old brings. Quit fooling yourself by trying to look like you were in your youth.

Move on: Focus on enjoying people and not on indulging in/or accumulating material things. Enjoy life and meet new people. Do the things you have always wanted to do but was unable to do so. Follow your dream and your hearts desire.

Plan to spend whatever you have saved: You deserve to enjoy it and the few healthy years you have left. Travel if you can afford it. Don`t leave anything for your children or loved ones to quarreal about. By leaving anything. you may cause even more trouble when you are gone.

Live in the present: Live in the here and now, not in the yesterdays and tomorrows. It is only today that you can handle. Yesterday is gone, tomorrow may not even happen.

Accept your health: Enjoy whatever your health can allow. Accept your physical weakness, sickness, limitations and other physical pains. it is a part of the ageing process.

Retire: Enjoy what you are and what you have right now. Stop working hard for what you do not have. if you do not have them, it`s probably too late.

Love yourself: Accept yourself for what and who you are, people, who trully love you, love you for yourself and not for what you have or for what you can give them, Anyone who loves you for what you. have will just give you misery.

Forgive and forget: Forgive and forget all those who have wronged you, Forgive yourself and others, Forget the slights, hurts, and misfortunes of yesterday. Look towards the future. Enjoy peace of mind and soul.

Befriend death: Don`t be afraid of death. It`s a natural part of the cycle of life. Death is the beginning of a new and better life, so prepare yourself not for death but for a new life.

(पृष्ठ 1 का शेष)

किए किन्तु वे कौरव-पांडव युद्ध को रोक न सके तभी उन्हें न्याय का पक्ष का संबल बनना पड़ा।

विजयी राष्ट्र का आत्म विश्वास- यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में ऐसा लगता है कि भारत को महान् शक्ति सम्पन्न बनाने का श्रीकृष्ण का संकल्प सफल नहीं हो सका किन्तु युगीन घटनाचक्र के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि भयंकर उथल पुथल के उस युग में देश को शक्ति और ऐश्वर्य के चरम शिखर पर ले जाना उनके राजनीतिक, कौशल और चातुर्य से ही संभव हो सका।

वैसे भी किसी महापुरुष की महानता का मूल्यांकन उसकी परिपूर्ण सफलता के आधार पर नहीं बल्कि समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व से पड़ने वाले व्यापक प्रभाव से ही किया जा सकता है।

कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों में विषयिष्णु प्रवृत्ति के बिना जीवित नहीं रह सकता। खासतौर पर आज के युग में जागरूक और संघर्षशील राष्ट्र ही अपनी स्वतन्त्रता बनाये रख सकते हैं। आज जबकि देश अनेक प्रकार की दुरभिसंघियों से घिरा है, श्रीकृष्ण का प्रखर विजय दर्शन ही हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

થોડોક સમય તો વિતાવો - ઋષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં

ગત ઋષિ બોધોત્સવ પર્વે ટંકારામાં આર્ય ઉદ્યોગપતિ મુંજાલ પરિવાર તરફથી સ્મૃતિશેષ બૃજમોહન મુંજાલજીની સ્મૃતિમાં યોગ સાધના ભવનનું નિર્માણ કરવામાં આવ્યું છે, હવે ગુરુકુલના બ્રહ્મચારિઓ માટે તેમના જ પરિવાર તરફથી વર્ગખંડોના નિર્માણની યોજના બની રહી છે. તો ગુજરાત સરકાર પણ ઋષિવરના જન્મસ્થાનના વિકાસ માટે રસ લઈ રહી છે અને ટૂંક સમયમાં જ સરકારની યોજનાની પણ જાહેરાત થશે. વિશેષ તો એ વાત રહી કે ગત ત્રણ વર્ષથી વરસાદ ઓછો વરસ્યો હતો, પરિણામે પીવાના પાણીની સમસ્યા વિકટ બની હતી, પરંતુ ઋષિ જન્મભૂમિ હોવાને કારણે ટંકારાની ડેમી નદીમાં નર્મદાનું પાણી ભરીને ગુજરાત સરકારે ઋષિવરનું ઋણ ચૂકતે કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. ગત મહીને ગુજરાત સરકારના પ્રધાન શ્રી ભરતભાઈ પંડ્યા ટંકારા પધાર્યા હતા તો કેન્દ્ર સરકારના આરોગ્ય મંત્રી શ્રી જે. પી. નડ્ડાજી પણ પધાર્યા હતા અને બ્રહ્મચારીઓની સાથે જ ભોજન લીધું હતું. આમ હવે ટંકારા ટ્રસ્ટ ટ્રસ્ટના પ્રધાન શ્રી સત્યાનન્દજી મુંજાલે જે પુરુષાર્થ કર્યો હતો, તેમના સ્વપ્નોને સાકાર કરવા તેમના પુત્રો અને પરિવારના સહયોગથી ઉદ્યોગ કરી રહ્યું છે.

ટંકારા ટ્રસ્ટ પરવાર સમગ્ર આર્ય જાતને આમંત્રણ આપે છે કોઈપણ દિવસે અને સમયે ઋષિજન્મભૂમિમાં પધારો આપનું યથોચિત સ્વાગત થશે, આપના આવાસ-નિવાસ અને ભોજનની સુયોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવશે.

सच्चाई की बात करेंगे, अच्छाई की राह चलेंगे।
भारत माता की सेवा में, अर्पित जीवन फूल करेंगे।
राष्ट्र-एकता नारा होगा, सद्भाव सदा दुलारा होगा।
बनकर के सीमा के रक्षक, दुश्मन को हुंकारा होगा।

टंकारा समाचार अगस्त 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-08-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.07.2017

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय